जीवन में नैतिक शिक्षा की उपयोगिता और महत्व

डॉ. आशा पाराशर
प्राध्यापक - समाजशास्त्र
शासकीय स्वशासी कन्या स्नातकोत्तर उत्कृष्टता महाविद्यालय, सागर (म.प्र.)

जीवन में नैतिकता का बड़ा महत्व माना गया है। व्यक्ति का संसार में कर्त्तव्य उसका सामाजिक व्यवहार, परिवार समाज में उसका आचरण नैतिकता की मांग करते है। नैतिकता से विहीन मनुष्य न तो आदर के पात्र होते है न ही वह स्वयं भी आत्मसंतोष को प्राप्त कर सकते है। जिसमें नीति निहित हो वह नैतिकता है। धर्माचरण ही आर्दश नैतिक मूल्य है। आत्मिक आध्यात्मिक और बौद्धिक मूल्य भी नैतिकता के परिचायक है। सत्य बोलना भी नैतिकता का मूल्य है। भारतीय संस्कृति में आश्रम व्यवस्था का बहुत ही महत्व बताया गया है। आश्रम की उपादेयता सम्पूर्ण उदान्तता एवं परम महत्व को अत्यन्त मानवीय संवेदना से परिनिष्ठित करके प्रस्तुत किया नैतिक दृष्टि से सर्वश्रेष्ठ व्यक्तित्व दशरथ पुत्र राम है। मर्यादाओं को चरितार्थ करने के कारण वे पुरूष से मर्यादा पुरषोत्तम बने। उनके चरित्र की सबसे बडी विशेषता मर्यादाओं का पालन करना ही नही अपितु उन्होने अपने परिवार, समाज, प्रजा यहा तक कि सेना से भी रण क्षेत्र में मर्यादित नैतिक मुल्यों का पालन कराया।

आज वैज्ञानिक प्रगति के युग में मानव का अवंमूल्यन हो रहा है। मानव निरन्तर ह्यास की ओर बढ़ रहा है। भौतिक वादी युग से निरन्तर लगाव हो रहा है। आध्यात्मवाद से उसका नाता टूट गया है। सामाजिक संबंधो में टकराव के कारण मानव मोह भंग की सी स्थिति से गुजर रहा है। मानव आज अपना अस्तित्व खो बैठा है। आज लौकिक संसार में सामाजिक तथा राष्ट्रीय जीवन में अशांति का ताण्डव दिखाई दे रहा है। मानव जीवन संघर्षमय होता जा रहा है। मनुष्य हर समय अनीति कार्य, निन्दनीय कर्म करने के लिये हर समय तैयार बैठा है। विश्व भर में सर्वत्र नैतिक मूल्यों का पतन ही नही वरन संपूर्ण लोप की सी स्थिति उपस्थित हो गयी है। जीवन का मुख्य उद्देश्य आज की भयावह स्थिति और सभी समस्याओं के पीछे छुपे कारणो को जानकर उनका उचित समाधान खोजना चाहिए। मनुष्य में अच्छे संस्कारों की कमी और पद भ्रष्ट करने वाली कमजोर शिक्षा पद्धति जो सिर्फ व्यवसाय रह गयी है।

अतः हमें अपने जीवन में नैतिक शिक्षा को महत्व देते हुये अपने विद्यालीन शैक्षणिक पाठ्यक्रम में नैतिक गुणों को प्रधान विषय के रूप में शामिल कर किशोर अवस्था के विद्यार्थी को नैतिक गुणो की भरपूर शिक्षा रामायण के पात्रों के गुणों और उनके उच्च नैतिक आदर्शो का पाठ पढाया जाना चाहिए। बच्चे ही देश का भविष्य होते है। नैतिक शिक्षा देने से ही बच्चो का बौद्धिक व्यक्तित्व विकास होने के साथ साथ उनका उच्च कोटि चरित्र निर्माण हो सकेगा। व्यक्ति जैसा साहित्य पढता है उसके मन में वैसे ही विचार आते है। विचार के आधार पर सोच निर्मित होती है। और सोच के आधार पर ही मनुष्य का व्यक्तित्व व चरित्र निर्माण होता है। घर के बुजुर्गों, माता, पिताओं को बचपन से ही अपने बच्चों को अच्छे संस्कार और उन्हे सत्य, अहिंसा, त्याग, परोपकार, वलिदान, दया, धर्म, धैर्य, प्रेम, सदाचरण, अनुशासन आदि का महत्व बताते हुये उन्हे जीवन में

ISSN 2395-031X

उतारने की प्रेरणा दे। क्योंकि परिवार के संस्कारों का व्यक्ति के जीवन पर गहरा प्रभाव पडता है। हमारा विज्ञान भी इस बात को प्रमाणित कर चुका है कि गर्भकाल के दौरान गर्भवती माता द्वारा किये गये व्यवहार आचरण और खान-पान का बच्चे के विकास से गहरा संबंध होता है। हमारे ऋषि, मुनियो ने यह बात हजारो वर्ष पूर्व ही, हमारे वेदो, पुराणों धार्मिक ग्रंथो आदि में इस बात की पुष्टि कर दी थी कि बच्चे की प्रथम पाठ्यशाला गर्भावस्था होती है।

समाज द्वारा स्थापित मूल्यों का प्रतिपालन ही नैतिकता है। वैदिक काल में वर्तमान तक आर्यावर्त में संस्कृति की जो अनवरत धारा प्रभावित रही, उसमें नैतिक मूल्यों को ही सर्वोपरि स्थान दिया जाता रहा है। एवं सदाचरण, सद्कार्य और नैतिक मूल्यों से परिपूर्ण जीवन से ही जीवन की संज्ञा दी जाती है। नैतिक मूल्यों के आभाव में वह पशुवत रह जाता है। नैतिकता किसी भी सामाजिक का वह अनिवार्य धर्म है जिसका उसे अनिवार्यतः ध्यान पूर्वक पालन करना चाहिए।

सामाजिक व्यवस्था मूल्यः संस्कृति के आधार पर निश्चित होती है, जिस समाज की जैसी संस्कृति रहेगी उसकी धर्म नीति, राजनीति, अर्थनीति, रीतिरिवाज, नैतिकता आज भी वैसी ही होगी। समाज के आंतरिक और बाहय दोनों ही पक्षो पर संस्कृति का प्रभाव पडता है। जो जीवन मूल्य और महत्व को निर्धारित करता है। संस्कृति विचार धाराओ के सम्पर्क से मानव मस्तिक से शुद्ध बनता है। जिससे उनके आचरण में पवित्रता आती है। नैतिक मूल्यों ह्रास, टूटते रिश्ते आदर्शो का खोखलापन आदि अनेक समस्याओं का साम्राज्य जैसे चहुंओर छा गया है। जिनका समाधान वैज्ञानिको के पास नही हैं। वे अपने अविष्कार से मानव को सूख समृद्धि के साधनो को समृद्ध कर उसे भौतिक सुख को प्रदान कर सकते है परन्तु मानसिक शांति नही हमें शांति धर्म एवं आध्यात्म ही प्रदान कर सकता है। जिनका निरूपण प्रत्यक्ष रूप से उपनिषद् एवं दर्शन आदि शास्त्रें में तथा अप्रत्यक्ष रूप से रामायण आदि महाकाव्यों कान्तासम्मित उपदेश की शैली में हुआ है। रामायण का प्रणयन कर उसके पात्रें द्वारा धर्म संस्कृति, आदर्श, नैतिक मुल्यों की स्थापन ही नही की, अपितु भावी समस्याओ के कारण एवं उनके निवारण के उपायों का दिग्दर्शन भी कराया जाता है।

मानव जीवन का महत्वपूर्ण पक्ष है उसका चरित्र चरित्र ही मानव को देवता बनाता है। नैतिक मूल्यों से ही ऐसे नेतृत्व की कल्पना की जा सकती है जो समाज में अनैतिकता, मूल्यहीनता, का उन्मूलन कर समाज का मार्ग आलोकित कर सकते है। भारतीय सभ्यता और संस्कृति का प्रतिनिधी ही नही यह सम्पूर्ण भारत को एक सूत्र में ग्रथित कर के समग्र सृष्टि के प्रति सौहार्द्र की प्रेरणा देने तथा जनमानस में आदर्श गुणों को समाहित कराने में सहायक है।

सन्दर्भ

1. कल्याण गीता प्रेस गोरखपुर, दिसम्बर 1967 ई
2. नैतिक मूल्यों की प्रासंगिकता - डॉ. ऐ. के. राय
3. वाल्मीकि रामायण 1/10, 1/13, 1/15, 1/49